"हिंदी बाल कहानी–साहित्य में पौराणिकता"

इगडे शीतल कचरु (शोधार्थी)
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय,
छत्रपती संभाजी नगर
Mobile–9689632181
ई–मेल:–shitaligade@gmail.com

शोध सारांश:

मनुष्य की शैशावस्था के पश्चात् आने वाली बाल्यावस्था सामाजिक शिक्षा का प्रथम सोपान है । लगभग दस–बारह साल की उम्र तक बाल्यावस्था कहलाती है । इस उम्र में बालक सृष्टि की हर चीज से परिचित होना चाहता है। इस उम्र में बच्चों में प्रचंड जिज्ञासा वृत्ति रहती है । ऐसे समय पर उनकी ज्ञानलालसा तृप्त होना आवश्यक हैं अन्यथा बच्चों की मनोदशा कुंठित होने का खतरा उत्पन्न हो सकता है । इस दिशा में हिंदी की बाल कहानियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । प्रस्तुत शोधालेख में हिंदी की पौराणिक बाल कहानियों पर प्रकाश डाला गया है । हिंदी की पौराणिक बाल कहानियाँ बच्चों को देवी–देवताओं की कहानियों के माध्यम से पोषक संस्कार देती है । साथ ही उन्हें माता–पिता की सेवा, बड़ों का आदर करना, किसी भी बात का घमंड न करना, एकता बनाये रखना, संगठन से रहना, ईमानदारी से कमाई करना, कर्तव्य का पालन करना, सेवाभाव वृति, निःस्वार्थी वृत्ति, चरित्र सपन्नता जैसी अच्छी–अच्छी सीख हिंदी की पौराणिक बाल कहानियों किस प्रकार देती है इस बात को समझाया है ।

बीज शब्द: पौराणिक, हिंदी बाल कहानियाँ, सीख, बच्चे, शिक्षा, समाज, आदि ।

पौराणिकता का अर्थ पुराण संबंधी या फिर जिसका उल्लेख पुराणों में हुआ हो । पुराण शब्द को अंग्रजी में मिथालोजी' भी कहते हैं । अंग्रेजी का मिथ शब्द मूलतः ग्रीक भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है कहानी । ग्रीक लोगों की प्राचीन कहानियों में मनुष्य और देवताओं के परस्पर संबंधों का वर्णन होता था । इसलिए इन कहानियों का अर्थ सामान्यतः देवताओं की कहानियाँ इस रूप में किया गया । आदिम जाति के मनुष्यों में ब्रह्मांड को लेकर अनेक प्रश्न उत्पन्न होते थे । जैसे कि पृथ्वी कैसे बनी? चाँद, सूरज, तारें कैसे बने? मनुष्य, पशु, पक्षी, आदि कैसे बनें। इन प्रश्नों के समाधान हेतु उन्होंने ऐसी कहानियों का सृजन किया जिन्हें 'मिथ' कहा जाता है । पुराणों का वर्ण्य. विषय कैसे बना? इस संदर्भ में डॉ. हरवंश लाल शर्मा ने पुराणों के वर्ण्य विषय के संबंध में लिखा है–

"पुराणों का विषय प्रायः सृष्टि का प्रकरण ही रहता था । इतिहास और पुराणों का भेद हमारे वाङ्मय में प्रसिध्द ही है । स्वयं पुराणों में ही पुराणों के पाच लक्षण बताए है. (1) सर्ग अर्थात् सृष्टि का विज्ञान, (2) प्रतिसर्ग अर्थात् सृष्टि का विस्तार, लय और फिर से सृष्टि, (3) सृष्टि की आदि वंशावली (4) मन्वंतर (5) वंशानुचरित ।"[1] भारतीय पुराणों में देवताओं की कहानियों और सृष्टि की निर्मिति के रूप को एक अनोखी शैली में प्रस्तुत किया है । भारतीय हिंदू समाज पुराणों को अपने धर्मग्रंथ भी मानते हैं ।

पुराणों की कहानियों को साहित्य ने अपनी रोचक तथा सरल भाषा में पाठकों के सामने प्रस्तुत किया । इसमें बाल कहानी. साहित्य भी अग्रसर है । बाल कहानी साहित्य में इन पौराणिक कहानियों को इस प्रकार बच्चों के सामने प्रस्तुत किया जाता

है कि बच्चे इसमें खो जाते हैं और अपने देवी, देवता तथा प्रकृति की जानकारी एवं प्रेरणा प्राप्त करते हैं । पौराणिक कहानियों के लेखन में हिंदी बाल कहानी साहित्य का भी अमूल्य योगदान है ।

बालसाहित्य बालक के कोमल मन का मनोरंजन करने के साथ ही उसके 'स्व' को विकसित करता है । बालसाहित्य किसे कहे इस संबंध में भी अनेक मतभेद दिखाई देते हैं । इस संदर्भ में अंग्रेजी बालसाहित्य के समीक्षकों का मत है कि यह आवश्यक नहीं है कि बच्चों के लिए लिखी गई सभी पुस्तकें साहित्य ही हो और न यह आवश्यक है कि बड़े लोग जिसे बालसाहित्य मानते हैं बाल रूचि के अनुकूल चुनी गई पुस्तके उस कसौटी पर खरी उत्तर जाए । ऐसे लोग भी है जो बड़ों की बातों का सरल ढंग से विवेचन ही बालसाहित्य मान लेते हैं । लेकिन यह विचार बच्चों को बड़ों का सूक्ष्म संस्करण सिद्ध करता है और वास्तव में यह धारणा बचपन को गलत तरह से समझने से उत्पन्न हुई है क्योंकि बच्चों का वास्तव में जीवन अनुभव बड़ों से बिल्कुल भिन्न होता है । उनकी एक अलग दुनिया होती है जिसमें जीवन के मूल्य बाल सुलभ मनोवृत्ति के आधार पर निर्धारित होते हैं बड़ों के अनुभव के आधार पर नहीं ।

हिंदी में मौलिक बालसाहित्य लेखन की शुरूआत वास्तव में बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक में ही हुई । सन् 1914 में विद्यार्थी, 1915 में शिशु और 1917 में बालसखा आदि पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ । उस समय सुप्रसिध्द लेखक, कवियों ने इसमें लेखन करके अपना योगदान दिया । जिनमें मैथिलीशरण गुप्त, कामता प्रसाद, गुरु, डॉ. महेंद्रनाथ गर्ग, चंद्रमौलि शुक्ल आदि प्रमुख थे । इन दिनों स्वतंत्र रूप से बालसाहित्य का लेखन आरंभ होने का और एक महत्वपूर्ण कारण यह भी था कि यूरोपिय भाषाओं से खासकर अंग्रेजी भाषा से बालसाहित्य भारत में आने लगा था । साथ ही उस समय स्वतंत्रता संग्राम गति पकड रहा था। माता–पिता तथा शिक्षाशास्त्री बच्चों को विदेशी या पाश्चात्य धर्म और संस्कृति से बचाने के लिए उन्हें भारतीय संस्कार देने के लिए विशिष्ट माध्यम की आवश्यकता महसूस कर रहे थे । 'बालसखा' जैसी साहित्य पत्रिका ने स्पष्ट किया था कि बच्चों में रुचि, उच्च भावनाओं का निर्माण दुर्गुणों को निकालना, बच्चों में सुधार, भारतीय संस्कृति परंपरा, धर्म की रक्षा, देशप्रेम, गौरवशाली इतिहास का ज्ञान, स्वतंत्रता और अभिमान आदि उद्देश्यों से प्रकाशित किया जाएगा ।

हिंदी की समग्र बाल कहानियों को देखा जाए तो बहुत सी कहानियों में पौराणिक संदर्भ मिलते हैं जिसको आधार बना कर बच्चों पर एक पोषक संस्कार किया जा सकता है । बच्चे जो पढ़ते हैं उन बातों का उन पर गहरा असर पड़ता है । बच्चों को बढ़ती उम्र में जिस प्रकार की पुस्तकें पढ़ने मिलेंगी उसी प्रकार के संस्कार उनमें आयेंगे ।

बाल कहानी साहित्य में पौराणिकता ऐसा सफल माध्यम है जिससे बच्चों को अच्छे विचार तथा अच्छे संस्कार भरपूर मात्रा में मिलते हैं । इस माध्यम से बच्चों को एक पोषक विचारधारा मिलती है । पौराणिक कहानियाँ हमें कई बातें सिखाती हैं । जगतराम आर्य का कहानी संकलन पूर्वजों की कहानियाँ में 'माता पिता की सेवा' कहानी में महात्मा श्रवण को राजा दशरथ द्वारा बाण लगता है तब वह अपने प्राणों की परवाह किए बगैर माता–पिता की ही चिंता करता है । राजा दशरथ से कहता है– "मैंने तो आपके क्षमा माँगने से पहले ही क्षमा कर दिया है । आप कृपा कर यह जल ले मेरे प्यासे माता पिता को पिलाइए क्योंकि वे बहुत प्यासे हैं । उनसे जाकर आप क्षमा माँगे । कहीं ऐसा न हो कि वे दोनों आपको श्राप दे दें ।"[2]

महात्मा श्रवण के वक्तव्य से यह पता चलता है कि उनके जीवन में माता–पिता का स्थान सर्वोपरि था, परंतु आजकल एकल परिवार पध्दति के अंतर्गत घर में माता–पिता और बच्चें इतना ही परिवार है । माता–पिता काम के सदर्भ में दिन भर घर से बाहर रहते हैं तो बच्चों को अच्छे संस्कार देने वाले परिवारजन भी घर में नहीं रहते ऐसे अवसर पर माता पिता की सेवा जैसी बाल साहित्य की पौराणिक कहानियाँ बच्चों के मन में माता पिता के प्रति आदरभाव तथा सेवाभाव की अमूल्य शिक्षा प्रदान करती है ।

हिंदी बाल कहानी साहित्य में कई ऐसी पौराणिक कहानियों हैं जो बच्चों को हर तरह से समझदार तथा संपन्न बनाती हैं। जैसे कि मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु उसका घमंड होता है। इसी के चलते मनुष्य सब कुछ खो देता है। यही बात 'राकेश भारती' अपनी 'दम्भ कहानी से समझाते हैं। कहानी में घमंड के कारण राजा अपना राजपाट खो बैठता है, उसे अनेक कठिनाइयों, युध्दों का सामना करना पडता है तथा किसी भी विषय की गहराई न जानने की प्रवृत्ति के कारण विश्वरूपा का वध करता है। इस बात का बदला लेने के लिए विश्वरूपा के छोटे भाई वृत्तासुर ने आक्रमण किया तो इंद्रलोक से सभी भाग कर विष्णु के पास मदद की गुहार लगाते हैं। उस समय विष्णु इन्द्र से कहते हैं– "तुमने दम्भ में आकर गुरु बृहस्पति का अपमान कर डाला, तब नहीं सोचा और फिर महाक्रोधी दुर्वासा से जा टकराएँ। और अब क्या सोचकर तुमने उस परम विद्वान और शान्तिप्रिय तपस्वी विश्वरूपा का वध किया है, बता सकते हो।"[3] अर्थात् इंद्र के अहंकार की वजह से उसे राज सिंहासन खोना पडा, विश्वरूपा की हत्या का दोषी बनना पड़ा, इतना ही नहीं वृत्तासुर को मारने के लिए वज्रास्त्र के निर्माण के लिए ऋषि दधिचि को देह त्यागना पड़ा। ये सारी घटनाएँ इंद्र के घमंड की वजह से घटी। कहानी के माध्यम से बच्चों को घमंड न कर विनम्रता से जीवन यापन करने की शिक्षा प्राप्त होती है। घमंड में कभी किसी को छोटा नहीं समझना चाहिए, क्योंकि एक छोटी–सी चोटी भी एक विशालकाय हाथी पर भारी पड़ती है। इसलिए कभी किसी को छोटा समझने की भूल नहीं करनी चाहिए, यही सीख बच्चों को इस कहानी दवारा मिलती है। इतना ही नहीं तो इस कहानी में 'एकता का महत्व' भी समझाया है। तारकासुर जब इद्रलोक पर विजय प्राप्त करता है तब अपने असूर समूह से कहता है "अब प्रसन्न होकर सभी असुर स्वर्ग की सुख सुविधाओं का उपभोग करो, समूचे देवगण अब तुम्हारे सेवक हैं। परन्तु ध्यान रहे कि यह सब जिस एकता से प्राप्त हुआ है वह तुम सभी दैत्य–दानवों में निरन्तर बनी रहे।"[4]

यह सच है कि एकता अर्थात् संगठन से ही सबका विकास होता है, विघटन से मात्र विनाश ही होता है। जिस तरह तीन बैल मित्र होने के कारण बाघ कभी उनका शिकार नहीं कर पाया परन्तु तीनों बैलों में फूट पड़ने पर बाघ ने एक–एक कर सबका शिकार किया। इसलिए संगठन अर्थात् एकता का होना आवश्यक है यह सीख बच्चों को उस पौराणिक कहानी के अंतर्गत मिलती है।

शुध्द कमाई को एक प्रकार से अच्छा कर्म भी कह सकते हैं। अच्छा कर्म करोगे तो शुध्द कमाई अपने आप होगी। बुरे कर्मों से शुध्द कमाई कैसे होगी? और बुरे कर्मों में कोई साथीदार भी नहीं होता। उन कर्मो का फल उसे ही भुगतना पड़ता है। इसी सत्य का ज्ञान जगतराम आर्य की 'डाकू से ऋषि' इस कहानी में होता है। वाल्मीकि पूर्वाश्रम में डाकू थे। एक बार नारद ने वाल्मीकि को सही–गलत का ज्ञान देते हुए बुरे कर्म स्वयं को ही भुगतने पड़ते है इसमें कोई साथ नहीं देता इस सच्चाई को समझाया। तब वाल्मीकि ने घर जाकर सबसे पूछा कि उसके इन कर्मो में कौन उसका साथ देगा? तब वाल्मीकि की माँ वाल्मीकि से कहती है– "हमें पालना तुम्हारा कर्तव्य है। चाहे जैसे भी धन कमा कर लाओ। परन्तु यदि तुम बुरा कार्य करते हो, तो उसका फल तुम्हें अकेले ही भोगना पड़ेगा।"[5] वाल्मीकि की माँ के इस वक्तव्य से वाल्मीकि को सत्य का ज्ञान हुआ कि बुरे कर्म का फल हमेशा बुरा होता है और उसे स्वयं भुगतना पड़ता है, कोई साथ नहीं देता। इस सत्य का ज्ञान होते ही वाल्मीकि डाकू से ऋषि बन गए और आगे चलकर उन्होंने 'रामायण' महाकाव्य का सृजन किया। इस तरह पौराणिक कहानियाँ बच्चों को बुरे कर्म और अच्छे कर्म का अंतर समझाकर जीवन में हमेशा अच्छे कर्म करने की प्रेरणा देती हैं।

जगतराम आर्य की 'और एक कहानी' युधिष्ठिर की धर्म परीक्षा बच्चों को समाज के प्रति सेवाभाव सीखाती है। दीन–दुखियों के दुख दूर कर उनकी सेवा करने का पाठ पढाती है। कहानी में जीवन भर अच्छे कार्य तथा सत्य आचरण के कारण युधिष्ठिर को स्वर्ग ले जाने के लिए स्वयं इन्द्र उन्हें लेने आएँ तब रास्ते में उनकी परीक्षा ली जाती है, जिसमें वे सफल होते हैं। स्वर्ग के रास्ते में नरक के जीव दुख से बिलग रहे थे वे युधिष्ठिर में नरक में रहने का आग्रह करते हैं तो इंद्र स्वर्ग में चलने का। तब

युधिष्ठिर धर्मराज इन्द्र से कहते हैं– "धर्मराज! इन दुखियों को बिलखता छोड़कर में आगे नहीं जा सकता । यदि मेरे यहाँ रहने से इन हजारों दुखियों का दुख तनिक भी कम होता है, तो मुझे इस नरक में ही रहना स्वीकार है । मैं इन लोगों के दुख के लिए स्वर्ग को भी छोड़ने को तैयार हूँ । क्षमा करो धर्मराज। अब मैं तुम्हारे साथ स्वर्ग नहीं जाऊँगा । तुम अकेले ही जाकर मेरी ओर से देवताओं से क्षमा माँग लेना ।"[6] अर्थात् यहाँ पर समाज में दुखी लोगों की किस प्रकार सेवा कर उन्हें दुखों से बाहर लाया जाएँ यह सीख मिलती है । एक प्रकार से यहाँ समाज सेवा की प्रेरणा ही मिलती है ।

पौराणिक कहानियों से बच्चों के मस्तिष्क का अच्छा पोषण होता है, समाज में एक अच्छा इन्सान बनने की प्रेरणा मिलती है । ब्रजभूषण गुप्ता की 'कच का चरित्र सुख' कहानी के माध्यम से चरित्र सपन्नता की सीख मिलती है । कहानी में जब कच संजीवनी विद्या सीखने दैत्यगुरु शुक्राचार्य के आश्रम में आता है तब देवयानी से उसकी मुलाकात होती है । देवयानी कच से प्रेम कर बैठती है, लेकिन कच उसे गुरु की पुत्री होने के कारण बहन मानता है । कच संजीवनी विद्या सीखकर वापस लौटने की तैयारी करता है तो देवयानी विवाह का प्रस्ताव रखती है तब कच देवयानी को अस्वीकार करता है तब देवयानी उसे संजीवनी विद्या भूल जाने का श्राप देती है, तो कच देवयानी से कहता है– "संजीवनी विद्या के भूल जाने का दुःख तो मैं झेल जाऊँगा, लेकिन अपना चरित्र खो बैठा तो दुःख से मर जाऊँगा ।"[7] इस प्रकार कच के द्वारा यहाँ पर चरित्र संपन्नता पर जोर दिया है । यही सच है क्योंकि एक निरोगी समाज का सृजन तभी हो सकेगा जब वह समाज चरित्र संपन्न होगा । यह सीख हिंदी बाल पौराणिक कहानियाँ देती है ।

समाज की प्रगति तभी होती है जब वह समाज चरित्र संपन्न होता है । इतना ही नहीं तो यह कहानियाँ मनुष्य को अधर्म तथा अनीति का विरोध कर नीति के मार्ग पर चलना सीखाती है । शैलेन्द्र प्रसाद कृत 'चाण्डाल का रूप' कहानी में श्रीकृष्ण जब महाभारत का युध्द समाप्त कर बहन सुभद्रा को लेकर द्वारिका के लिए चल पड़े तो रास्ते में मारवाड़ में 'मुनि उत्तक' के आश्रम में गए । तब कृष्ण और उत्तक ऋषि के सवाद से अधर्म का दुष्परिणाम सामने आता है । कृष्ण उत्तक ऋषि से कहते हैं– "कौरव अन्याय अधर्म और अनीति के साक्षात् अवतार थे । मैंने स्वय उन्हें बहुत समझाया कि वे अत्याचार और अधर्म छोडकर, धर्म और नीति के पथ पर चलें, पर उन्होंने मेरी बात अनसुनी कर दी ।"[8] अर्थात् अधर्म और अनीति के कारण ही कौरवों का विनाश हुआ । इसलिए हर समय मनुष्य को नीति का मार्ग अपनाना चाहिए जिससे उसका विनाश नहीं विकास होगा यही सीख प्रस्तुत कहानी से मिलती है ।

हिंदी बाल कहानी– साहित्य में पौराणिक कहानियों के अंतर्गत बच्चों को कई प्रकार से अच्छी सीख मिलने के साथ ही बच्चों का मनोरंजन भी होता है । अर्थात् बच्चों को मनोरंजन के द्वारा कहानी अपनी ओर आकर्षित करती है । जगतराम आर्य की 'नारद मुनि की हास्य–कथा' कहानी में नारद मुनि हँसने के लिए छोटी–मोटी लीलाएँ, नाटक रचाया करते थे इसका चित्रण है और उनकी इसी लीला के कारण ही पारिजात वृक्ष को कृष्ण द्वारा स्वर्ग से धरती पर लाया गया । नारद मुनि सत्यभामा से कहते हैं– "अब तुम श्रीकृष्ण से रूठ जाओ । जब वे तुम्हें मनाने आएँ तो कहना, अपने रुक्मिणी को पारिजात की कली दी है, अब मैं तभी मानूँगी जब आप मुझे पारिजात का पेड लाकर देंगे ।"[9] अर्थात् नारदमुनि की छोटी मोटी लीलाओं में मनोरंजन होता ही था परन्तु उसके साथ ही उसमें समाज का हित छुपा रहता था । ऐसी कहानी से बच्चों का मनोरंजन होता है जो उनके थके हुए शरीर तथा मन में ऊर्जा का सृजन कर कहानियों की ओर आकर्षित करता है ।

निष्कर्षतः हिंदी बाल कहानी–साहित्य में पौराणिक कहानियाँ एक ऐसा विषय है जिससे बच्चों को भरपूर आनंद तथा ज्ञान मिलता है । भगवान की कहानियों के माध्यम से बच्चों को एक सही दिशा देने का काम ये कहानियाँ करती हैं । बच्चे भी इन कहानियों के माध्यम से एक नई दिशा प्राप्त कर उस राह पर चलने का प्रयास करते हैं, जिससे समाज अपने आप ही निरोगी एवं सदृढ बन विकास के पथ पर आगे बढ़ता है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 डॉ. हरवंशलाल शर्मा, सूर और उनका साहित्य, पृ. 109

2. जगतराम आर्य, पूर्वजों की कथाएँ, माता–पिता की सेवा, हिमाचल पुस्तक भंडार, दिल्ली, 2013, पृ. 31

3. राकेश भारती, भारतीय पौराणिक कहानियाँ, दम्भ, पंकज बुक्स, दिल्ली, 2010, पृ. 91–92

4. राकेश भारती, भारतीय पौराणिक कहानियाँ, स्कन्द, पंकज बुक्स, दिल्ली, 2010, पृ. 28

5. जगतराम आर्य, पूर्वजों की कथाएँ, डाकू से ऋषि, हिमाचल पुस्तक भंडार, दिल्ली, 2013, पृ.37

6. जगतराम आर्य, पूर्वजों की कथाएँ, युधिष्ठिर की धर्म परीक्षा, हिमाचल पुस्तक भंडार, दिल्ली, 2013, पृ. 19

7. ब्रजभूषण गुप्ता, वह सब देखता है, कच का चरित्र. सुख, प्रखर प्रकाशन, दिल्ली, 2012, पृ.20

8. शैलेंद्र प्रसाद, हमारे हरिजन भक्त, चाण्डाल का रूप, स्वर्ण जयंती प्रकाशन, दिल्ली, 2013, पृ. 06

9. जगतराम आर्य, पूर्वजों की कथाएँ, नारदमुनि की हास्यकथा, हिमाचल पुस्तक भंडार, दिल्ली, 2013, पृ.12.